अध्याय 7

I13HFZ

मौर्य वंश और राजा अशोक

(322 ई.पू. से 185 ई.पू.)

भारत के राष्ट्रध्वज को आपने लहराते देखा होगा। केसरिया, सफेद और हरे रंग से सजे तिरंगे के बीच में बना चक्र बहुत सुंदर दिखता है। यह चक्र कहाँ से आया?

यह चक्र लिया गया है सारनाथ स्तंभ से जिसे मौर्य वंश के प्रसिद्ध राजा अशोक ने बनवाया था। आमतौर पर इतिहास में उन राजाओं को महत्व मिलता है जिन्होंने बड़े–बड़े युद्ध जीते हैं। लेकिन अशोक की बात सबसे अलग है क्योंकि उसने युद्ध की जगह धर्म के रास्ते पर चलकर लोगों के दिलों को जीता। दया, प्रेम और करुणा को अपने शासन का आधार बनाया।

चित्र–7.1 (भारत का राष्ट्रीय–चिन्ह)

चित्र–7.2

अशोक–चक्र में कितनी धारियाँ हैं ?

हम राजा अशोक के बारे में बहुत–सी बातें करेंगे। लेकिन पहले चर्चा करते हैं चंद्रगुप्त मौर्य और बिंदुसार की, जो मौर्यवंश में अशोक से पहले हुए थे। अशोक के दादा चंद्रगुप्त मौर्य बहुत वीर और साहसी थे। चाणक्य नाम के एक बुद्धिमान पंडित की मदद से चंद्रगुप्त ने मगध के राजा धनानंद को हरा दिया। उत्तर और पश्चिम के कई हिस्सों को जीतने के अलावा उसने सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस को भी हराकर यूनानी राजाओं का आगे बढ़ना रोक दिया। बाद में सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त से मित्रता कर ली और मेगस्थनीज नाम का राजदूत उसके पास भेजा। चाणक्य एक अच्छे लेखक भी थे, उनकी पुस्तक ''अर्थशास्त्र'' से हमें उस समय की शासन–व्यवस्था के बारे में काफी जानकारी मिलती है। इसी समय मेगस्थनीज ने भारत में जो कुछ देखा उसका अपनी पुस्तक ''इंडिका'' में वर्णन किया है। उसमें लिखा है कि भारतीय सभ्य थे। वे अपने घरों में ताले नहीं लगाते थे। अधिकतर गाँवों में रहकर खेती करते थे। सैनिकों को अच्छा वेतन मिलता था आदि। चंद्रगुप्त के बाद उसका बेटा बिंदुसार राजा बना। उसने दक्षिण के अनेक हिस्सों को जीतकर अपने राज्य को और बड़ा बना लिया। बिंदुसार के बाद अशोक सिंहासन पर बैठा। इस समय मौर्य राज्य बहुत बड़ा और शक्तिशाली हो चुका था। अशोक भी अपने पिता और दादा की तरह वीर और साहसी था। उसने कलिंग नामक स्वतंत्र जनपद के साथ युद्ध किया और उसे हराकर अपने राज्य में मिला लिया।

कलिंग–युद्ध

आमतौर पर यह देखा गया है कि युद्ध में सफलता मिलने पर राजा खुश होते हैं। कलिंग–युद्ध जीतकर भी अशोक का मन दुख से भरा रहा, क्योंकि युद्ध में लाखों सैनिक मारे गए, हजारों घायल हुए और अनेक स्त्री–बच्चे बेसहारा हुए। यह सब देखकर उसे युद्ध में मिली सफलता बेकार लगने लगी। तभी उसने संकल्प किया कि वह अब कभी युद्ध नहीं करेगा। उसने यह भी निश्चय किया कि वह हथियारों से शत्रु को हराने की जगह धम्म (धर्म) के रास्ते पर चलकर लोगों के दिलों को जीतेगा, जिससे लोगों की भलाई हो सके। इन भावनाओं को प्रजा तक पहुँचाने के लिए उसने इन्हें चट्टानों पर खुदवाया।

''राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग को जीता।''

''इससे मुझे बहुत दुख हुआ। यह क्यों? जब एक आजाद जनपद हराया जाता है, वहाँ लाखों लोग मारे जाते हैं और बंदी बनाकर अपने जनपद से बाहर निकाल दिए जाते हैं। वहाँ रहनेवाले ब्राह्मण–भिक्षु मारे जाते हैं।''

'' ऐसे किसान जो अपने बंधु– मित्रों, दास और मजदूरों से नम्रतापूर्ण बर्ताव करते हैं – वे भी युद्ध में मारे जाते हैं और अपने प्रियजनों से बिछुड़ जाते हैं।''

'' इस तरह हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं दुखी होता हूँ। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।''

''मैं मानता हूँ कि धर्म से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं यह बातें खुदवा रहा हूँ ताकि मेरे पुत्र और पोते भी युद्ध करने की बात न सोचें।''

अशोक का धम्म

अशोक के धम्म में न तो कोई देवी–देवता थे और न ही उसमें कोई व्रत, उपवास या यज्ञ करने की बात कही गई थी। धम्म का पालन करने के लिए पूजा आदि की बात भी नहीं कही गई थी।

आपको आश्चर्य हो रहा होगा कि व्रत–उपवास नहीं, देवी–देवताओं की पूजा नहीं तो धम्म कैसा। दरअसल कलिंग युद्ध के भंयकर विनाश ने अशोक की सोच को काफी बदल दिया था।

अशोक का व्यवहार अपनी प्रजा के लिये वैसा ही था जैसा पिता का अपनी संतान के प्रति होता है। अशोक जब लोगों को झूठ बोलते, गलत आचरण करते, मूक प्राणियों के प्रति हिंसा करते और धर्म के नाम पर आपस में संघर्ष करते देखता तो उसे बहुत दुख होता। उसने इन बातों पर विचार किया तो पाया कि राजा होने के कारण उसकी यह जिम्मेदारी है कि प्रजा को सही राह दिखाए। इस काम के लिए उसने धर्ममहामात्र नामक अधिकारी रखे जो गाँव–गाँव, नगर–नगर के दौरे कर प्रजा को सही

चित्र–7.3 स्तंभ लेख

व्यवहार की बातें बताते थे। दूर–दराज के क्षेत्रों में यही बातें उसने पत्थर के स्तंभों (खंभो) और चट्टानों पर खुदवाए।

1. ''यहाँ किसी जीव को मारा नहीं जाएगा। उसकी बलि नहीं चढाई जाएगी। पहले राजा की रसोई में हजारों जानवर रोज मांस के लिए मारे जाते थे। पर अब सिर्फ तीन जानवर मारे जाते हैं, दो मोर और एक हिरण। ये तीन जानवर भी भविष्य में नहीं मारे जाएँगे।''

2. ''अपने माता और पिता की आज्ञा मानना अच्छा है। मित्रों, संबंधियों और श्रमणों के प्रति उदार भाव रखना अच्छा है। थोड़ा ही व्यय और थोड़ा संचय करना अच्छा है।''

3. ''लोग विभिन्न अवसरों पर तरह तरह के संस्कार करते हैं। ''ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलनेवाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलते हैं। वे क्या हैं? गुलामों और मजदूरों से नम्रतापूर्ण व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव–जंतुओं से संयम से व्यवहार करना, ब्राह्मणों और भिक्षुओं को दान देना, आदि।''

4. "अपने धर्म के प्रचार में संयम से काम लेना चाहिए। अपने धर्म के गुणों को बढ़ा–चढ़ा कर कहना या दूसरे धर्मों की बुराई करना दोनों ही गलत है। हर तरह से, हर अवसर पर, दूसरे संप्रदायों का आदर करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति अपने संप्रदाय की उन्नति और दूसरे संप्रदायों का उपकार करता है।"

अशोक ने ये संदेश लोगों की बोलचाल की भाषा पाली में खुदवाए।

अशोक ने अपने विचार प्राकृत भाषा में ही क्यों खुदवाए ?

अशोक की शासन–व्यवस्था

भारत के मानचित्र 7.1 में आपने देखा कि अशोक का राज्य बहुत विशाल था। उसकी राजधानी थी पाटलिपुत्र। इतने बड़े राज्य पर शासन करना आसान नहीं था। शासन में उसकी सहायता के लिये योग्य लोगों का एक दल था जिसे मंत्रिपरिषद कहा जाता था।

विशाल राज्य की देखभाल के लिए उसे चार प्रांतों में बाँटा गया था।

उत्तर में तक्षशिला, दक्षिण में सुवर्णगिरी, पूर्व में तोसली और पश्चिम में उज्जयिनी। इन नगरों और उसके आसपास के इलाकों की देखभाल राजकुमार करते थे। अनेक अधिकारी और कर्मचारी उन्हें सहयोग देते थे। ये कर्मचारी गाँवों और शहरों में व्यवस्था को सँभालते थे। किसानों, कारीगरों व व्यापारियों से लगान वसूल करते और राजा की आज्ञा का पालन न करने वालों को दंड देते थे।

उनके अलावा कुछ बड़े अधिकारी भी थे जिन्हें महामात्र कहा जाता था। वे राज्यभर का दौरा करते और शासन का काम देखते थे। इतना ही नही प्रजा के सुख–दुख को जानने तथा अधिकारियों के काम पर नजर रखने के लिए अशोक स्वयं राज्य में दूर–दूर के गाँवों का दौरा करते थे। उन्होंने लोगों की भलाई के लिये कई सड़कें बनवाई। उनके दोनों तरफ छायादार व फलदार वृक्ष लगवाए। अस्पताल व धर्मशालाएँ बनवाई और कुएँ खुदवाए थे।

क्या आपको इतिहास का कोई और राजा याद आ रहा है जिसने अशोक की तरह अपनी प्रजा को सुख पहुँचाने का प्रयत्न किया हो ?

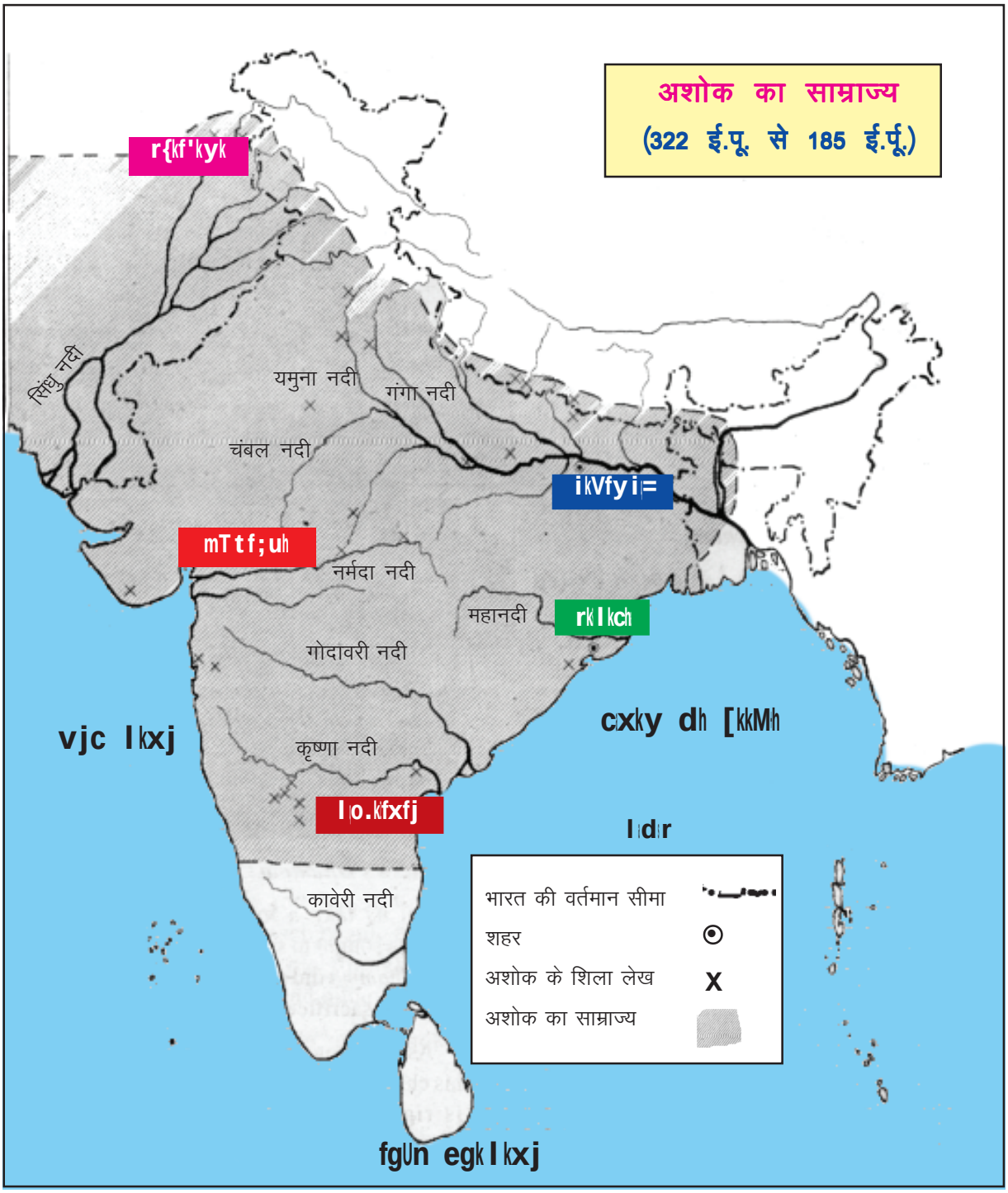

EkkUkfPk«k 7-1

यद्यपि अशोक बौद्ध धर्म को माननेवाला था तथापि वह सभी धर्मो का सम्मान करता था और उन्हें दान भी देता था। वह प्रजा से भी कहता था, कि वे सभी धर्मो की बातें सुने और उनका सम्मान करें।

अशोक कलाकारों को भी आगे बढ़ने में मदद करता था। आज भारत–सरकार के नोटों और कागजातों पर चार सिंहवाली जो मूर्ति दिखाई देती हैं वह अशोक के समय की ही है। सारनाथ और दूसरी जगहों से प्राप्त स्तंभ और मूर्तियाँ कला के ऐसे नमूने हैं, जो हमें आज भी अशोक की याद दिलाते हैं।

बच्चों आपको याद होगा कि पिछली कक्षा में आपने हमारे राष्ट्रीय प्रतीक चिह्नों के बारे में पढ़ा था। जिसमें चार सिंहवाली मूर्ति में सिंह के अतिरिक्त बैल, घोड़ा और चौबीस तीलियों या धारियों वाली चक्र की आकृति बनी हुई है। सिंह को शक्ति का बैल को श्रम का घोड़े को ऊर्जा और गति का और चक्र को निरंतर कार्य और प्रगति का प्रतीक माना गया है। चक्र के नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा है जिसका अर्थ है–केवल सत्य की जय होती है।

अशोक के बाद मौर्य वंश करीब 50 वर्षों तक और चला। उसके बाद उसका स्थान अनेक छोटे–छोटे राज्यों ने ले लिया।

> राजा अशोक के दया, प्रेम, शांति, और सभी धर्मो के प्रति सम्मान की भावना के कारण उसके सारनाथ स्तंभ–शीर्ष को हमारा राष्ट्रीय–चिह्न माना गया है।

अभ्यास के प्रश्न

(अ) जोड़ी बनाइए–

क		ख
सेल्यूकस	–	मगध का शासक
बिंदुसार	–	पाली भाषा
धनानंद	–	अशोक का पिता
अशोक के शिलालेख	–	यूनानी सेनापति

I1CDHM

(ब) प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. चंद्रगुप्त मौर्य ने किस प्रकार विशाल राज्य की स्थापना की ?
2. युद्ध न करने का संकल्प अशोक ने क्यों किया ?
3. अशोक ने राज्य की व्यवस्था को भलीभाँति चलाने के लिये क्या काम किए ?
4. अशोक के 'धम्म' के बारे में आप क्या सोचते हैं ? अपनी भाषा में लिखिए।
5. भारत के मानचित्र में अशोक के राज्यों को चिह्नांकित कीजिए।
6. अशोक अपने राज्य के आदेश जनता तक कैसे पहुँचाता था? पता लगाइए।

(स) आइए कुछ नया करें –

उन वस्तुओं की सूची बनाइए जिन पर आपको अशोक–चिह्न मिलते हैं।

अब बताइए अशोक–चिह्न में आपको क्या–क्या दिखाई देता है।